नीलबाग में शिक्षा

❑ डेविड ऑसबरॉ

अनुवाद : आनंद गोदीका

नीलबाग स्कूल में प्रयुक्त शिक्षा-दर्शन, शिक्षण-पद्धति और प्रशिक्षण पर डेविड ऑसबरॉ ने एक संक्षिप्त पुस्तिका जारी की थी । यह पुस्तिका डेविड की मृत्यु से कुछ समय पहले प्रसारित हुई । इस समय तक डेविड के शिक्षा विषयक विचार और नीलबाग स्कूल को लेकर लोगों की दिलचस्पी काफी बढ़ गयी थी। यहां इस पुस्तिका का अनुवाद प्रकाशित किया जा रहा है, जो नीलबाग के शिक्षा-प्रयोग से परिचित तो कराता ही है, शिक्षा से जमीनी स्तर पर जुड़े लोगों को प्रेरणा और मार्गदर्शन का स्रोत भी हो सकता है ।

नीलबाग में दी जाने वाली शिक्षा के मुख्य बिंदु अग्रांकित हैं । यही हमारी शिक्षण तकनीकों व बच्चों से हमारे संबंधों का मुख्य आधार है ।

हम महसूस करते हैं कि सफलता एवं आनन्द के साथ सीखने के लिए शिक्षकों व बच्चों में प्रेमपूर्ण व आत्मीय संबंध बहुत जरूरी हैं । आमतौर पर पाए जाने वाले शिक्षक-छात्र संबंध में ''हम और वे'' की मानसिकता बहुत प्रचलित है, जिससे बचा जाना बहुत जरूरी है । बच्चे बेहतर काम करते हैं जब उनमें यह भावना हो कि वे क्रूर शत्रुओं से नहीं वरन प्यार करने वाले दोस्तों से घिरे हैं । यहां न केवल स्टाफ और बच्चों के बीच बल्कि बच्चों में भी आपसी रिश्ते प्रेमपूर्ण बनाने का हर संभव प्रयास किया जाता है । जो संस्कार शिक्षकों और बच्चों ने ग्रहण किए हैं और अपने चारों ओर की दुनिया से ग्रहण कर रहे हैं उन के कारण संबंध अक्सर तनावपूर्ण हो जाते हैं । लेकिन खुले विमर्श का माहौल तथा प्रश्न पूछने एवं उत्तर देने की इच्छा वांछनीय संबंधों के विकास में बहुत सहायक हैं।

हम अनुभव करते हैं कि शिक्षण को गतिशील होना चाहिए। जो शिक्षण नीरस या उबाऊ है या जीवंत नहीं है या जिसकी विषय वस्तु नीरस या उबाऊ है, एक सजग और प्रश्नाकुल मस्तिष्क को जन्म नहीं दे सकते । इसका तात्पर्य यह नहीं है कि शिक्षक सदा ही शारीरिक रूप से क्रियाशील रहे, बल्कि वह विद्यार्थियों को जो दे, उन्हें वह जीवंत और ऐसा लगना चाहिए, जिसमें वे पूरी तरह लीन हो जाएं चाहे वह उन्हें जानकारी दे रहा हो, किसी कौशल का अभ्यास करवा रहा हो या उनसे किसी और किस्म की अंत:क्रिया का माध्यम बन रहा हो।

हम नीलबाग में हमेशा याद रखते हैं कि प्रतिस्पर्धा आदमी को आदमी से काट देने वाले कारकों में प्रमुख है तथा और बहुत सारे दु:खों का भी कारण है । युद्ध, अन्तर्समुदायिक संघर्ष, मानव का मानव के द्वारा शोषण और बहुत सी अन्य बुराइयों का कारण बच्चों के एक अतिस्पर्धात्मक तंत्र में, लालन-पालन में देखा जा सकता है । जहां बच्चे को अपने पड़ोसी से प्रतिस्पर्धा के लिए खड़ा कर दिया जाता है और जहां किसी भी प्रकार का सहकार असंभव हो जाता है। एक बच्चा शैक्षिक और अध्ययनेतर गतिविधियों में स्वयं को दूसरे से काफी आगे पा सकता है, लेकिन जब तक इसका नैतिक अच्छाई से संबंध नहीं जोड़ा जाता, ये असमानताएं महत्त्वहीन बनी रहती हैं ।

अगर हम स्पर्धा को हमारे शिक्षा-तंत्र का आधार नहीं बनाना चाहते तो हमें बच्चों में तुलना करने से भी बचना चाहिए और बच्चों को ऐसी तुलनाएं न करने के लिए शिक्षित करना चाहिए । आप नीलबाग में शायद ही सुनेंगे कि फलां उससे बेहतर है आदि-आदि या कि ''तुम्हारा काम उससे बेहतर है''। इसका मतलब शिक्षक का काम की गुणवत्ता के प्रति बौद्धिक अंधापन नहीं है बल्कि यह सतत तुलना भरी दुनिया में जीने की बुराई की गहरी समझ को इंगित का संकेत है । उसका मतलब यह भी है कि आप नीलबाग में शायद ही ''अगर'' से शुरू होने वाले वाक्य सुनेंगे । जैसे कि '' अगर तुम ठीक से बर्ताव करोगे, तो मैं तुम्हें खेलने की इजाजत दे दूंगा ।''

हम नीलबाग में यह अनुभव करते हैं कि बिना स्पर्धा वाले समाज में ही सच्चा सहकार फल-फूल सकता है । इसलिए स्कूल का तंत्र समय सारिणी और सीखने की स्थितियां ऐसी हैं जहां स्पर्धा नहीं है। हमारे यहां कोई अंक नहीं मिलते, कोई टेस्ट नहीं होते, कोई द्वेषकारक तुलनाएं नहीं है, इसलिए बच्चे अनुभव करते हैं कि वे अपने कौशल व ज्ञान खुशी से दूसरों के साथ बांट सकते हैं । अक्सर बीस बच्चों की कक्षा में चार या पांच बच्चे दूसरों की सहायता में लगे हुए दिख सकते हैं । इस तरह शिक्षक और सभी आयु एवं योग्यता स्तरों के बच्चे सीखने और दूसरे रचनात्मक कामों में सहयोग कर सकते हैं ।

उपरोक्त (मान्यताओं) को ध्यान में रखते हुए यह तो बिना कहे ही स्पष्ट है कि नीलबाग में पुरस्कार और दण्ड का कोई उपयोग नहीं है । एक मात्र पुरस्कार प्रोत्साहन से मिलने वाला पुनर्बलन ही होता है । बच्चों को बेशक उनकी गलतियों के बारे में साफ-साफ बताया जाता है, लेकिन कोई भी गलती वस्तुपरक ढ़ंग से देखी जा सकती है यदि इसे दर्शाने वाला सामान्यत: स्वार्थहीन सलाह देने वाला माना जाता हो । अत: नीलबाग में दंड को वांछित या आवश्यक नहीं समझा जाता । इसी से यह बात निकलती है कि अगर कोई दंड-व्यवस्था नही हो तो कोई नियम भी नहीं होंगे, अगर कोई नियम सचमुच में रखना हो तो उसे लागू करने का भी कोई तरीका होगा, बिना दंड के यह असंभव होगा ।

ज्यादातर स्कूली तंत्रों में शिक्षक की एक अलग ही मुख मुद्रा होती है । अपनी सामान्य आवाज से अलग दूसरी आवाज से वह बोलता है । उग्रता का मुलम्मा चढ़ी उसकी मुख-मुद्रा और आवाज कक्षा के लिए ही होती है । कुछ हद तक यह बच्चे की शरारतों के विरुद्ध एक प्रतिरक्षा-तंत्र(डिफेंस-मैकेनिज्म) की तरह काम करता है तथा अंशत: यह कक्षा के उठे हुए प्लेटफार्म, अलग वेशभूषा और उच्चतर व्यवहार की तरह (श्रेष्ठतासूचक)'स्टेटस सिंबल' का काम करता है जिसके द्वारा कि सामान्य शिक्षक बच्चों पर अपनी सत्ता चलाता है । नीलबाग के तनावमुक्त और मित्रतापूर्ण माहौल में शिक्षकों के लिए सत्ता जमाने वाले इन अवलंबों से बचना एवं खेल और काम में मानवीय तरीके से घुलना मिलना आसान हो जाता है।

अभिप्रेरण मनुष्य के सीखने की प्रक्रिया का एक अहम हिस्सा है और जब कोई स्कूल सामान्य अभिप्रेरकों (जैसे-अंक, टेस्ट कक्षोन्नति, इनाम और दंड, प्रतिस्पर्धा, तीखी झिड़की आदि) को त्याग देता है तब यह आवश्यक हो जाता है कि दूसरे अभिप्रेरक उनके स्थान पर रखे जाएं । नीलबाग में बच्चे अपने हर काम में काफी अभिप्रेरित दिखाई पड़ते हैं और यह अभिप्रेरण मौटे तौर पर दो तरह से उत्पन्न होता है, जिनका कि आपस में संबंध है । पहला विद्यालय की व्यवस्था से संबंधित है, जहां पर सामान्य तौर पर होने वाला विभाजन, जो कि प्राय: आयु और शैक्षिक आधार पर होता है, अनुपस्थित है । बच्चे को अपनी गति और स्तर पर काम करने दिया जाता है। बिना आगे बढ़ने या धीरे चलने के दबावों के, जो कि आम तौर पर कक्षा में काम करते हैं। इसी से यह संभव होता है कि बच्चे अपने काम में असफलता की बजाय सफलता अधिक मात्रा में प्राप्त करते हैं । यह सफलता सतत प्रोत्साहन से मिल कर अभिप्रेरण का नि: शेष स्रोत बन जाती है ।

प्रोत्साहन एक अन्य महत्त्वपूर्ण कारक है । यह अच्छा व्यवहार सुदृढ़ करने के लिए ही नहीं बल्कि बच्चों की शैक्षिक व सह-शैक्षणिक गतिविधियों में प्रेरित करने के लिए भी आवश्यक है । इसका मतलब यह नहीं है कि व्यवहार या कार्य के संपादन से हुई गलती की ओर इशारा नहीं किया जाता, बल्कि श्रेष्ठता की ओर लगातार बढ़ने को एक मूल्य के रूप में स्थापित किया जाता है ।

अभिप्रेरण के पश्चात बच्चे के सीखने में दूसरा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कारक है ध्यान केन्द्रण की क्षमता। बिना ध्यान के, जो कि या तो शिक्षक पर होगा या अपने काम पर, अधिक नहीं सीखा जा सकता । अत: शिक्षक का एक मुख्य काम बच्चे को ऐसी क्षमता से युक्त करना है कि वह ध्यान लगा सके । यह विचार-विमर्श व अभ्यास के द्वारा संभव होता है और गाने या कविता सुनाने की गतिविधि द्वारा भी । स्कूल के अंकुरण से ही, हमने नीलबाग में, गाना सिखाने में काफी समय व्यतीत किया है । यह अपने आप में एक काफी आनंददायक सुफलदायक अनुभव ही नहीं है, बल्कि इसने बच्चों में ध्यान देकर सुनने की आदत भी डाली है और अपने मस्तिष्क को अनुशासन में रखना भी सिखाया है ।

सफल और आदर्श अध्ययन परिस्थिति के लिए दो कारक बहुत महत्वपूर्ण हैं, वे हैं - शिक्षक की सक्षमता और आत्मविश्वास। नीलबाग में शिक्षक-छात्र संबंध पर ही नहीं शिक्षक की व्यवसायिक सक्षमता विकसित करने पर भी बहुत ध्यान दिया जाता है। शिक्षकों को प्रेरित किया जाता है कि वे खूब पढ़ें। पुस्तकों का चयन सोच-समझ कर तथा विवेकपूर्ण ढंग से करें । वे शिक्षा पर आधुनिकतम लेखकों को पढ़ें और उनमें से उन विचारों को चुनें जो कक्षा में शिक्षण के लिए सर्वाधिक उपयोगी लगते हों। यह व्यवसायिक सक्षमता, उनमें आत्मविश्वास भर देगी और ये दोनों शिक्षक को एक ऐसी आदर्श अध्ययन परिस्थिति निर्मित करने के लिए प्रेरित करेंगी,

जहां सफलतापूर्वक सिखाना संभव होगा।

कहना न होगा कि बच्चे अपने घरों और परिवेश से कुछ बुरी चीजें भी सीखते हैं और इससे कुछ व्यवहारगत (बिहेवियरल) समस्याएं भी लगातार रहती हैं । शिक्षक, जो कि ऐसे ही, अतिस्पर्धात्मक और उबाऊ शिक्षा-तंत्र में बड़े हुए हैं - कक्षा में स्वयं को ऐसी स्थिति में पाते हैं, जहां संबंध-नाते कई बार टूटने के कगार पर पहुंच जाते हैं । नीलबाग में शिक्षकों को प्रोत्साहित किया जाता है कि जहां तक संभव हो सके वे बच्चों से संभावित टकराव से बचें, क्योंकि ऐसे टकरावों से समस्या का जो समाधान होता है, वह दुर्भाग्यपूर्ण हो सकता है । इसका तात्पर्य यह है कि प्रारंभ में कुछ सीमा तक औपचारिकता या कहें रस्मो-रिवाज (ritraly) भी फायदेमंद होते हैं। यह औपचारिकता और उस का धीरे-धीरे सहजता एवं अनौपचारिकता में बदलना एक ऐसा पैटर्न है जो यहां की शिक्षा में बार-बार उभरता है । जब बच्चे कुछ साल पहले पहली बार यहां आए, तो समय-सारणी और पढ़ाने का तरीका आज की तुलना में अधिक औपचारिक था । मसलन अंग्रेजी और दस्तकारी की शिक्षा, औपचारिक तरीके व कौशल के अर्जन से आरंभ की गई ताकि आगे अधिक रचनात्मक तरीकों का स्वच्छंदतापूर्वक सहारा लिया जा सके । वैसे भी हमारा दिन संस्कृत श्लोकों के पाठ व गाने से शुरू होता है, एक तरह से शांत और औपचारिक माहौल में । जैसे-जैसे दिन चढ़ता जाता है औपचारिकता तिरोहित होने लगती है । इस तरह के नियंत्रण से वैसे ही संबंध बनते हैं जैसा हम चाहते हैं, मैत्री और सौहार्द के साथ । हमारी कोशिश रहती है कि हम बच्चों के साथ टकराव की स्थिति पैदा न करें जिसमें अपने शिक्षक अथवा साथियों से भिड़ना उनकी विवशता बन जाए ।

बच्चों की बहुत सारी समस्याएं होती हैं, कुछ उनके व्यक्तित्वों से उपजी होती हैं तथा कुछ का कारण हमारी शिक्षा पद्धति है । इन सभी समस्याओं को सहानुभूतिपूर्वक सुलझाना पड़ता है और संभव हो सके तो प्यार और बुद्धिमत्ता के साथ । नील बाग के शिक्षक इस बारे में सावचेत हैं कि बच्चों की समस्याओं में से बहुत सी समस्याएं तो वैसी ही है, जिनका वे अपने दैनिक जीवन में सामना करते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि बहुत सारी समस्याओं का निपटारा शिक्षक और शिष्य द्वारा संयुक्त रूप से सीखने की प्रक्रिया में किया जाए क्योंकि वे 'बुद्धिमान शिक्षक का मूर्ख छात्र को प्रबोधन' की तकनीक से तो नहीं ही सुलझती हैं। कहना न होगा कि बहुत सारे बच्चों के लिए अपनी समस्याओं के बारे में बात करना घबरा देने एवं परेशान कर देने वाला अनुभव होता है या फिर अपनी समस्या को शब्द देना उनके लिए मुश्किल होता है । नीलबाग में जिस तरह के संबंध शिक्षक व छात्रों के बीच स्थापित किए जाते हैं, उनमें इस चीज को सहज बनाने पर जोर दिया जाता है ।

शिक्षकों का प्रमुख गुण है धैर्य । पर इसे अर्जित करने में समय लगता है । अक्सर बच्चे वह नहीं सीख पाते, जो हम चाहते हैं कि वे सीखें, कि वैसा व्यवहार नहीं करते, जैसा हम चाहते हैं कि वे करें । ऐसा भी होता है कि वे वांछित सहयोग नहीं कर पाते या संबंधों के बिगड़ने से बच नहीं पाते। ऐसे ही शिक्षक भी स्वयं को अधूरा समझते हैं, या कि कक्षा को नियंत्रित करने में असफल पाते हैं या नए आवश्यक कौशल न सीख सकने पर अफसोस जताते हैं। ऐसे में धैर्य एक शिक्षक की मनोवैज्ञानिक बुनावट का आवश्यक हिस्सा लगता है ।

स्कूल

क्या ऐसा स्कूल होना संभव है, जिसमें आमतौर पर प्रचलित शिक्षा व्यवस्था के दोष न हों, जो अतीत के बहुत सारे शिक्षाविदों और चिंतकों के विचारों को सन्निहित करता हो, साथ ही जो अनुशासनहीनता, गंदेपन और निम्न-स्तरीय शैक्षिक मापदण्डों से दूर हो, जो प्रगतिशील विचारधारा से अनुप्राणित होने के साथ इतिहास प्रसिद्ध स्कूलों से प्रेरणा पाता हो और जो परंपरागत शिक्षा एवं नवीन शिक्षा दोनों की अच्छाइयों का उपयोग कर सके।

नीलबाग अस्तित्व में है क्योंकि हम मानते हैं कि ऐसा स्कूल निर्मित किया जा सकता है । ऐसा स्कूल चलाना न तो मुश्किल है और न यह महंगा है । नीलबाग ऐसा स्कूल है जिसमें फीस नहीं लगती और यह ऐसे तबके को ध्यान में रखकर बनाया गया है जिसे हम आम तौर पर वंचित कहते हैं । यह ग्रामीण भारत के हृदय में बसा हुआ है जो कि पहाड़ियों और पेड़ों से घिरा है। यह आवासीय स्कूल नहीं है, हालांकि कुछ विद्यार्थी नीलबाग में काम करने वालों की संताने हैं। दूसरे बच्चे आस-पास के गांवों से आते हैं ।

स्कूल के अतिरिक्त यहां शिक्षकों को प्रशिक्षित करने का विद्यालय है, कार्यशाला है और मिट्टी के बर्तन बनाने का छप्पर है।

वर्तमान में स्कूल में 22 बच्चे हैं । 12 बालक और 10 बालिकायें जिनकी आयु लगभग 2 से 13 वर्ष के बीच है । वे सभी गरीब परिवारों से हैं । यद्यपि एक या दो अभिभावक तेलुगु पढ़ सकते हैं, तथापि बच्चे शिक्षित परिवेश से नहीं आते हैं और उनके घरों में पुस्तक या कोई लिखित सामग्री उपलब्ध नहीं है । स्वभावत: बच्चे बुद्धि, योग्यता और अपनी उपलब्धियों के स्तर पर एक-समान नहीं हैं ।

इस विद्यालय के संचालन के कुछ प्रमुख नियामक विचार निम्नांकित है :

बच्चों को इस बात की स्वतंत्रता है कि वे किसी कक्षा में आएं या न आएं ।

बच्चों को एक दूसरे से सहयोग करने के लिए प्रेरित किया जाता है न कि स्पर्धा करने को । स्पर्धा आम तौर पर स्कूल में मुख्य

अभिप्रेरण-कारक होता है लेकिन नीलबाग में ऐसा नहीं है । इसका प्रमुख कारण यह है कि अधिकांश विषयों में हर बच्चे की अपनी अलग गति होती है और अलग स्तर होता है । यद्यपि कुछ ऐसे समूह बनाए जाते हैं जो थोड़े समय के लिए बच्चों को एक साथ रखते हैं, उन बच्चों को जो कि सीखने में समान स्तर पर होते हैं, लेकिन ऐसे समूह लगातार बदलते रहते हैं, क्योंकि बच्चों की सीखने की गति अलग-अलग होती है ।

स्कूल में कोई बड़ी-छोटी कक्षाएं नहीं है और फलस्वरूप कोई अगली कक्षा में चढ़ने जैसा नहीं होता । कुछ बच्चे योग्यता, परिश्रम और दूसरे कारकों से प्रेरित हो अन्य बच्चों की तुलना में तीव्रता से प्रगति करते हैं और इसी तरह विपरीत कारणों से कुछ बच्चे धीमी गति से आगे बढ़ते हैं । सामान्य प्रशासकीय सुविधा के लिए बच्चे चार समूहों में विभाजित हैं जिन्हें ''किंगफिशर'' ''स्वैलो'' ''सनबर्ड'' और ''रॉबिन'' (चारों ही पक्षियों के नाम हैं) कहा जाता है । यदा कदा ऐसे समूह भी बनाए जाते हैं मसलन एक छोटे बच्चों का समूह, जो अभी गणित नहीं सीखता है या ज्यादा बच्चों का समूह जो अभी तृतीय भाषा नहीं सीखता।

कुछ विषय तेलुगु और कुछ अंग्रेजी में पढ़ाए जाते हैं, ताकि एक भाषा माध्यम की पढ़ाई के दोषों से बचा जा सके । वैसे तो ये दोष अनेक हैं लेकिन मुख्य दोष अग्रांकित हैं :-

(अ) तेलुगु और कन्नड़ माध्यम के स्कूलों में बच्चों का अंग्रेजी का एक कालांश होता है और प्राय: पांचवीं या छठी कक्षा तक तो बिल्कुल भी अंग्रेजी नहीं होती । इसका तात्पर्य है कि वह अंग्रेजी पढ़ने और लिखने की कोई क्षमता अर्जित नहीं करता और इससे उसे बहुत नुकसान होता है यदि वह स्वयं कोई चीज अंग्रेजी की किताबों से सीखना चाहे । बच्चों के लिए कन्नड और तेलुगु में बहुत कम किताबें उपलब्ध हैं और जो हैं वे या तो सामान्य पाठ्य पुस्तकें हैं या बहुत थोड़ी-सी पूरक-सामग्री, जो मूलत: किस्से कहानियां हैं। बच्चों के लिए किस्से-कहानियों के अलावा शायद ही कोई सामग्री हो, इसलिए जिन स्कूलों में मातृ भाषा शिक्षा का माध्यम है, विस्तृत अध्ययन की संभावनाएं न्यून हो जाती है ।

(ब) दूसरी ओर, अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में, बच्चा अगर अंग्रेजी में सहज अधिकार अर्जित कर लेता है, तो वह बहुत कुछ पढ़ सकता है, यदि स्कूल में काफी सारी अंग्रेजी की किताबे हों। वैसे बहुत कम स्कूलों में ऐसा होता है। पर ज्यादातर अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में, बच्चा शायद ही अपनी मातृभाषा सीखता हो और हिन्दी भाषा के सतही ज्ञान से काम चलाने लगता है, भाषा के वास्तविक ज्ञान से कोसों दूर । इसके अतिरिक्त इन स्कूलों की ज्यादातर गतिविधियां भारतीय चिंतन और संस्कृति से कटी हुई होती हैं।

हालांकि बच्चों को काफी प्रोत्साहन दिया जाता है और उनके काम में रुचि ली जाती है, कोई अंक या ग्रेड (श्रेणी) नहीं दी जाती।

कोई टेस्ट या परीक्षाएं नहीं होती क्योंकि बच्चों के समूह छोटे होने के कारण शिक्षक बच्चों के दैनंदिन कामों पर नजर रख सकता है । इससे मूल्यांकन के प्रचलित तरीकों पर समय बर्बाद नहीं किया जाता ।

बच्चे की किताबों में कोई रिमार्क नहीं लिखे जाते । कभी-कभार लिखी जाने वाली प्रशंसा के अतिरिक्त ।

बच्चे की पढ़ाई में हुई प्रगति को नैतिकता से नहीं जोड़ा जाता। दूसरे शब्दों में, बच्चे को अच्छा नहीं कहा जाता अगर वह कोई सवाल सही कर देता है, और बुरा भी नहीं, अगर सवाल गलत हो जाए । कोई दंड नहीं दिया जाता, न तो किसी तथाकथित गलती के प्रतिकार के रूप में, न ही भावी गलतियों को हतोत्साहित करने की भावना से । न ही ऐसे दण्ड देने के लिए कोई स्कूल समिति है जो शिक्षक स्वयं नहीं देना चाहता ।

शुरू से ही बच्चों को सिखाया है कि वे स्वयं सीखे और अपने सीखने के प्रति जिम्मेदार रहें ।

बिना स्पर्धा, दंड, अंक और परीक्षा के जो कि सामान्य स्कूलों के अभिप्रेरक कारक हैं, अभिप्रेरण कैसे पैदा किया जाता है और कैसे उसे बनाये रखा जाता है, यह ऐसा सवाल है, जिसे कोई भी पूछ सकता है । सच्ची अभिप्रेरणा जो नीलबाग के बच्चों में अच्छी तरह भरी है, शायद निम्न चीजों से पैदा होती है :-

(अ) शिक्षक और बच्चों के बीच मधुर संबंध

(ब) सामग्रियों का रोचक प्रस्तुतीकरण

(स) प्रत्येक बच्चे को उसके स्तर और क्षमता के अनुसार सामग्री देना; न कि किसी काल्पनिक औसत कक्षा के स्तरानुसार; जिसे कि बच्चा अधिकतर सफलता पूर्वक काम में ले सके ।

(द) अनवरत व आनंददायी उत्साहवर्धन

(य) नए बौद्धिक अनुभव की प्रचुरता

(र) किसी भी समय बच्चे को अपनी पसंद का काम चुनने की स्वतंत्रता । हालांकि यह स्वतंत्रता समय-सारणी से रूपांतरित होती है । इसका व्यावहारिक अर्थ है कि बच्चे को अंग्रेजी के

कालांश में अंग्रेजी का काम करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है । (यदि वह बाहर पेड़ों के नीचे न खेलना चाहे) वह उस कालांश में अंग्रेजी विषय से संबंधित कोई भी गतिविधि चुन सकता है ।

(ल) सामान्यत: हर बच्चा दूसरे बच्चे का सहायक व शिक्षक होता है और साथ में सीखने वाले प्रौढ़ की भी पूरी सहायता करता है ।

(व) हर गतिविधि को बच्चे व स्टाफ के लिए आनन्ददायक बनाने का प्रयत्न होता है और वे ऐसी हैं भी।

इसका तात्पर्य यह नहीं है कि किसी प्रगतिशील स्कूल की तर्ज पर यहां मुक्त समय सारणी का आलम चलता है । न ही यहां एकीकृत दिन या खुली योजना प्रणाली है । एक नियमित समय-सारणी लागू है लेकिन यह कहा जाना चाहिए कि यह शिक्षकों की सुविधा के लिए है, न कि बहुत कड़ी अनुपालना के लिए। हालांकि ऐसा लगता है कि बच्चे कुछ हद तक दिन की व्यवस्था को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लेते हैं । विशेष रूप से यदि

समय-सारणी इस प्रकार है :-

8.45 बच्चों से 8.45 पर विद्यालय प्रांगण में होने की अपेक्षा की जाती है । एक बच्चा विद्यालय की चाबी ले लेता है और इकट्ठा होने से आधा घंटा पहले बच्चे ऐसे कार्य करते हैं जो उन्हें सौंपे जाते हैं (जैसे -कक्षाओं की सफाई, पेड़ों को पानी देना, पानी पीने के गिलासों को धोना आदि, चूंकि विद्यालय में नौकर की व्यवस्था नहीं है) । जिन कामों को किया जाना है उन्हें ब्लैकबोर्ड पर लिख दिया जाता है । हर हफ्ते बच्चे द्वारा किया जाना वाला काम बदल जाता है ।

9.00 घंटी बजती है और बच्चे पंक्तिबद्ध होकर कक्षा में अपने निर्धारित स्थानों पर बैठ जाते हैं । दिन की शुरुआत में हम कुछ औपचारिकता से काम लेते हैं । कक्षा में बैठने की जगह निर्धारित है। दिन में सभा के बाद ही वे इसे बदल सकते हैं । जब सब बच्चे बैठ जाते हैं, तब सुबह संस्कृत के कुछ श्लोको से प्रारम्भ होती है। इसके पश्चात विभिन्न भाषाओं में समूह गायन होता है।

9.40 आम तौर पर इस समय पर 10 मिनट की छुट्टी होती है और बच्चे या तो खेलते हैं या अपने बगीचे में पानी देते हैं । हर बच्चे की एक फूलों की क्यारी होती है और इसके अतिरिक्त एक सामूहिक उद्यान होता है जहां वे सब्जियां उगाते हैं । इसके बाद बच्चे अंग्रेजी भाषा पर काम करते हैं जिसमें पढ़ने और लिखने के अतिरिक्त कभी-कभी मौखिक कार्य भी होता है । हर बच्चा तरह तरह की पाठ्यपुस्तकें इस्तेमाल करता है। और वह भी अपनी गति पर ।

10.45 अन्तराल

11.00 बड़े बच्चे जो कि तेलुगु या अंग्रेजी या दोनों को ठीक-ठीक पढ़ सकते हों, आधा घंटा सभी तरह की पूरक किताबें पढ़ने में व्यतीत करते हैं, या तो कक्षा में या पेड़ों के नीचे। स्कूल में अच्छा पुस्तकालय है और बच्चों को अधिक से अधिक पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाता है । जो बिना किसी सहायता के पढ़ने में असमर्थ हैं वे या तो खेलते हैं या साथ बैठकर कहानी सुनते हैं ।

11.30 बच्चों को दो समूहों में विभाजित किया जाता है । हर समूह मनमर्जी के आधार पर, बिना उनकी योग्यता या उम्र को ध्यान में रखकर बनाया जाता है । हर समूह में 3 से 13 वर्ष आयु के बच्चे होते हैं जिसमें लड़के और लड़कियां दोनों होते हैं। समूहों का संघटन हर पखवाड़े बदल दिया जाता है । एक समूह तेलुगु पर काम करता है दूसरा दस्तकारी पर ।

तेलुगु का काम व्यक्तिगत स्तर पर होता है और बच्चे पाठ्यपुस्तकों को अपनी गति से पढ़ते हैं और कार्यपुस्तिका में काम करते हैं जो कि बच्चे की क्षमतानुसार होता है ।

इस समय दूसरे समूह को दस्तकारी सिखाई जाती है और बच्चे अपने-अपने काम करते हैं ।

12.30 (थोड़ा पहले या बाद में सुविधानुसार) बच्चे दोपहर के भोजन के लिए अपने घरों को लौट जाते हैं, जो कि इस समय स्कूल द्वारा नहीं दिया जाता। उम्मीद है कि भविष्य में ऐसा संभव हो पाएगा।

2.00 सारे स्कूल की एक साथ विज्ञान और पर्यावरण की कक्षा लगती है । ये दोनों विषय अंग्रेजी अथवा तेलुगु में पढ़ाये जाते हैं लेकिन बड़े बच्चे जिस पाठ्यपुस्तक का इस्तेमाल करते हैं, वह अंग्रेजी में होती है । हर हफ्ते तीन दिन विज्ञान को और दो दिन

पर्यावरण अध्ययन को दिए जाते हैं ।

2.50 अंतराल। अगले आधे घंटे में स्कूल को तीन खंड़ों में बांट दिया जाता है । कुछ बच्चे कन्नड़ सीखते हैं, लेकिन यह चौथी भाषा स्कूल के सात सबसे बड़े बच्चों तक ही सीमित है, दूसरे बच्चे केवल तीन भाषाएं ही सीखते हैं । इसी तरह सभी बच्चे गणित नहीं सीखते हैं । इसी समय छोटे बच्चों का एक समूह गणित सीखता है । बहुत छोटे बच्चे मिट्टी का काम सीखने जाते हैं, जहां वे मिट्टी के मॉडल बनाते हैं और चाक चलाना सीखते हैं।

3.30 छोटे बच्चे जो अभी तक गणित कर रहे थे मिट्टी के बर्तन बनाने के शैड पर चले जाते हैं । और बड़े बच्चे गणित सीखते हैं। आशा है कि गणित के लिए समूहों में विभाजन अगले साल मिट जाएगा और गणित सीखने वाले बच्चे एक समूह में हो जाएंगे जहां उन्हें उनकी गति पर काम करने को प्रोत्साहित किया जाएगा। लेकिन यहां भी तेलुगु और दस्तकारी का काम करने वाले बच्चों की तरह समूहन होगा क्योंकि (बर्तन बनाने की शैड) में जगह सीमित है । हर हफ्ते शुक्रवार को बड़े बच्चों का 3.30 से 4.00 बजे तक एक विशेष पीरियड होता है, जिसे प्रश्नकाल कहा जाएगा और वहां बच्चे अपनी पसंद के सवाल पूछते हैं । कई तरह के सवाल पूछे जाते हैं और नैतिकता व अच्छाई से संबंधित समस्याओं पर विमर्श होता है ।

4.00 से 5.00 के बीच बहुत सारी गतिविधियां चलती हैं। बड़े बच्चों में से दो बर्तन बनाने के शैड पर जाते हैं जो यह उनके लिए संभव बनाता है कि यदि वे चाहें तो आधा घंटा चाक पर बिताएं। दूसरे बच्चे अपने बगीचों को पानी देते हैं या सामूहिक सब्जी के बगीचे में खेती करते हैं या खेलते हैं या घर चले जाते हैं । अगर कोई इमारत बन रही है, तो वे इमारत पर काम करते हैं ।

6.00 सीनियर बच्चे इस समय स्कूल में होमवर्क के लिए लौटते हैं । एक प्रेशर लैम्प उन्हें दिया जाता है और दो घंटे का यह पीरियड बिना किसी निरीक्षण के संपन्न होता है । यहां आना या न आना बच्चों की इच्छा पर निर्भर है । कोई होमवर्क जैसी चीज नहीं दी जाती है, पर बच्चे जो भी काम करते हैं वह सामान्य कालांशों में जांचा जाता है। बच्चों को यह स्वतंत्रता होती है किसी भी विषय पर कितना ही समय लगाएं, बात करें, एक दूसरे की सहायता करें, खेल खेलें, चित्र बनाएं या पढ़ें । यह बिना निरीक्षण का समय बच्चों के लिए बेहद उपयोगी होता है। केवल इसलिए नहीं कि वे जो काम यहां करते हैं वह अन्यत्र कक्षाओं में करना पड़ता है बल्कि इसलिए भी कि यहां उन्हें अपने आप काम करना सीखने का अवसर मिलता है ।

स्कूल छोटा है । इसे जानबूझकर छोटा रखा है क्योंकि हम बच्चों और स्टाफ के बीच मजबूत और आत्मीय संबंध स्थापित करने पर जोर देते हैं और यह तभी संभव है जब स्टाफ सभी बच्चों को जाने और न केवल जाने बल्कि अच्छी तरह जाने । इसका मतलब है कि स्टाफ के सदस्य बच्चों को ऐसी सहायता और सलाह दे सकते हैं जो उनके बौद्धिक और नैतिक विकास के लिए आवश्यक हो । इसका तात्पर्य यह नहीं है कि किसी तरह के संस्कार आरोपित किये जाने का प्रयास किया जाता है । किसी तरह का मताग्रह या राय बच्चों के सामने प्रस्तुत नहीं की जाती। किसी प्रकार की धार्मिक या राजनीतिक विचारधारा उनके सामने नहीं रखी जाती । स्कूल का उद्देश्य किसी सांचे में ढला आदर्श विद्यार्थी बनाना नहीं है । कहना न होगा, जैसे ही बच्चों और शिक्षकों में अच्छे संबंध होंगे, संस्कार-निर्माण से बच पाना असंभव होगा, कम से कम निषेधों के जरिए । दूसरे शब्दों में, अगर शारीरिक उछलकूद, रगबी या फुटबाल या वीणा की कक्षाएं नहीं होंगी तो बच्चा उनकी इच्छा किए बिना ही बड़ा हो जाएगा । बौद्धिक और व्यावहारिक गतिविधियों के चयन मात्र से संस्कार निर्माण के काम से बचा नहीं जा सकता। यानी सकारात्मक किस्म के अनुकूलन को टाला जाता है, कम से कम ऐसे मसलों में जो विवादास्पद हैं । ज्यादातर लोग इस बात से सहमत होंगे कि बच्चे को प्रकृति की सुंदरता के प्रति सचेत बनाया जाए, उन्हें यह बताया जाए कि सत्य की खोज करना अच्छा है । अपने काम में लगातार आगे बढ़ते रहने में बड़ा सुख है या उन्हें यह बताना कि अपने आप को साफ रखना चाहिए । ये तो मोटे तौर पर अविवादास्पद बिंदु हैं । दूसरी तरफ, चूंकि सभी के राजनीतिक, नैतिक व धार्मिक विचार एक जैसे नहीं होते, अत: उन्हें बच्चों के सामने नहीं रखा जाता । बच्चे निस्संदेह इन चीजों के बारे में सीखेंगे, लेकिन उन्हें यह नहीं बताया जाएगा कि अ सही है और ब गलत। उनसे अपेक्षा की जाएगी कि इस पर अपना मत वे स्वयं बनाएं या कि अपना निर्णय तब तक स्थगित कर दें, जब तक कि

वे स्वयं कोई राय बनाने लायक क्षमता अर्जित नहीं कर पाते।

बच्चों द्वारा काफी समय कौशल अर्जित करने के कार्यों (व्यावहारिक गतिविधियों) पर व्यय किया जाता है, जो कि अकादमिक कामों से भिन्न हैं । इसका तात्पर्य यह नहीं है कि हम व्यावसायिक शिक्षा या ऐसी किसी चीज के बारे में सोच रहे हैं । हम नल ठीक करने का या बढ़ईगिरी का प्रशिक्षण नहीं दे रहे हैं, बल्कि मानवों को शिक्षा दे रहे हैं । सीखने के सामान्यीकरण (यह सिद्धांत की एक क्षेत्र में प्राप्त दक्षतायें दूसरे क्षेत्र में हस्तान्तरित होती हैं, उदाहरणार्थ अच्छा लकड़ी का काम सीखने में मदद मिलती है।- संपादक) के बारे में जो कुछ भी कहा गया हो, हमें यह लगता है कि यदि बच्चा दक्षतायें प्राप्त करने की कला सीख लेता है तो (अर्थात दक्षता सीखना सीख जाता है तो - संपादक) इस क्षमता का सामान्यीकरण संभव है । व्यावहारिक गतिविधियां दक्षता प्राप्त करने की क्षमता हासिल करने के सर्वश्रेष्ठ तरीकों में से एक हैं। मुख्य रूप से इसलिए कि बच्चों को इनमें बहुत आनन्द आता है। उदाहरणार्थ गायन को समय सारणी में अंग्रेजी के अलावा सबसे अधिक समय दिया जाता है । हमने पाया है कि गाना सीखने की प्रक्रिया में बच्चा सुनना भी सीखता है । और यह दूसरे विषयों को सीखने में अत्यन्त मददगार है । हमारा जोर कौशल और 'कन्सेप्ट' (विचार) सीखने पर है, न कि सूचनाओं के संग्रह पर । स्कूल का सारा ढांचा इस तरह निर्मित किया गया है कि बच्चा स्वयं सीखने की क्षमता अर्जित करे और दूसरों को भी सीखने में मदद करे।

समूह की ''पारिवारिक व्यवस्था'' (एक ही समूह में विभिन्न आयु वर्ग के बच्चों को रखना) के अनगिनत फायदे हैं । शायद इनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण तो यही है कि इस ढांचे में बच्चे एक दूसरे की सीखने में मदद करें, इसकी व्यवस्था बहुत सरलता से की जा सकती है । क्योंकि बच्चों की आयु, बौद्धिक विकास एवं कड़ी मेहनत करने की क्षमताओं में व्यापक अंतर एक ही समूह में पाया जाता है । अत: सदा ही कुछ बच्चे कुछ अन्यों से अधिक जानने वाले मिल जाते हैं। फिर एक ऐसे वातावरण में जो तनावमुक्त हो, मैत्रीपूर्ण हो और जहां प्रतिस्पर्धा नहीं आपसी सहयोग हो, स्वीकृत जीवन मूल्य हों, दूसरों को सीखने में मदद करना एक आनन्द दायक एवं मूल्यवान गतिविधि हो जाती है। बच्चे अपने साथियों से भी उतना ही अच्छी तरह सीखते हैं जितना की वयस्कों से, और कई बार तो साथियों से बेहतर सीखते हैं । ऐसी व्यवस्था में 25 या 30 बच्चे होने पर भी सामान्यतौर पर अपनाई जाने वाली सख्त शिक्षण पद्धतियों की तुलना में बच्चे अधिक सीखते हैं । एक और बड़ा लाभ है । विशेष रूप से भारत में जहां छोटा अपने से बड़े की बात सुनता है, उससे बड़ा थोड़े और बड़े की और वह अपने से बड़े की। अत: ऐसे वातावरण में सामाजिक अनुशासन स्वाभाविक एवं सरलता से आयु भेद समूह में व्यवहार का अंग बन जाता है । आज की प्रचलित प्रणाली में सारा अनुशासन वयस्क (शिक्षक) की तरफ से आता है अत: बच्चों में 'हम और वे' (हम माने बच्चे और वे माने शिक्षक) की भावना भी सामान्य बात है। 'परिवारसम व्यवस्था' में अनुशासन बच्चों की तरफ से भी आता है अत: हम और वे की मानसिकता से बचने में मदद मिलती है ।

वर्तमान में स्कूल के विषयों और गतिविधियों पर एक नजर :-

अंग्रेजी

कक्षा में बहुत सारा मौखिक कार्य होता है । चार साल के बाद सारे बच्चे अंग्रेजी ठीक से समझ लेते हैं और जो थोड़े बड़े हैं, वे इस भाषा में बातचीत और लेखन के जरिए अपने भावों एवं विचारों को संप्रेषित कर सकते हैं । विविधतापूर्ण पाठ्य-पुस्तकें प्रयोग में लाई जाती हैं और पूरक पुस्तकों का यहां एक अच्छा पुस्तकालय भी है । कक्षा में मौखिक कार्य, पढ़ने और लिखने के अलावा 11 से 11.30 के बीच बच्चों को पेड़ों के नीचे बैठकर पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाता है । यह योजना पिछले साल ही शुरू की जा सकी क्योंकि उससे पहले तक बच्चे अपने बूते पर अच्छी तरह नहीं पढ़ सकते थे । ज्यादातर बच्चे महीने में लगभग 15 पुस्तकें पढ़ लेते हैं और आने वाले वर्षों में यह संख्या बढ़ जाएगी । उन्हें विविधतापूर्ण काव्य पाठ भी सुनने को मिलता रहता है । कई तरह की कार्यपुस्तिकाओं का इस्तेमाल हो रहा है और बच्चे सुलेख के लिए इटेलिक (टेढे अक्षर वाली सुलेख के लिए) पुस्तिकाएं भी काम में लेते हैं । (अभी दिसम्बर 1976) एक तीन बच्चों का, एक चार बच्चों का, एक पांच बच्चों का और एक अन्य तीन बच्चों का समूह है और शेष बच्चे अपने आप काम करते हैं, लेकिन ये समूह बार बार बदलते रहते हैं । रचनात्मक लेखन हाल ही में शुरू किया गया है और बहुत सारे बच्चे अपनी कविताएं व कहानियां लिखते हैं । उनमें से कुछ तो पाक्षिक न्यूज लेटर के लिए प्रकाशित होती हैं ।

तेलुगु

तेलुगु सभी को सिखाई जाती है हालांकि जो बहुत छोटे हैं, उन्होंने अभी पढ़ना या लिखना शुरू नहीं किया है । सभी आयु के बच्चों के दो समूह हैं, जब एक तेलुगु सीख रहा है तो दूसरा दस्तकारी सीखने जाता है ।

पाठ्यपुस्तकें मातृभाषा में उपलब्ध सामान्य पुस्तकें नहीं है बल्कि उन्हें शिक्षक द्वारा बहुत-सी छपी सामग्री में से रचनाएं चयनित करके बनाया जाता है । हर पुस्तक में एक कहानी या गद्यांश होता है, अंत में सवाल होते हैं जो कि पाठ्यपुस्तकों में सामान्य तौर पर पाए जाने वाले प्रश्नों से बहुत भिन्न होते हैं । संदर्भ पर भी प्रश्न होते हैं, पर ऐसे सवाल नहीं होते हैं जिनका कि पाठ से ज्यों का त्यों

उत्तर दिया जा सके । ज्यादातर सवाल ऐसे होते हैं जो बच्चे से कल्पनाशीलता और रचनात्मकता की मांग करते हैं । इन छोटी किताबों और कार्य-पुर्सिलिखते हैं और इसके अलावा, पाक्षिक दीवार समाचार पत्र के लिए समाचारों को प्रस्तुत करते हैं।

कन्नड़

सभी बच्चे कन्नड़ नहीं सीखते । केवल बड़े बच्चे ही सीखते हैं । कर्नाटक राज्य की यह भाषा उनके लिए चौथी भाषा है और उन्होंने भी दो साल पहले ही इसे सीखना आरंभ किया है । पहला शिक्षक ऐसा था जिसकी मातृभाषा तेलुगु थी और जो कन्नड़ कतई नहीं जानता था । हमने यह सोच कर प्रयास किया कि देखें इस भाषा को न जानने वाला शिक्षक बच्चों में इसे पढ़ने-जानने की दिलचस्पी पैदा कर सिखा सकता है या नहीं । हम यह कह सकते हैं कि यह प्रयोग काफी सफल रहा । सौभाग्य से तेलुगू और कन्नड़ लिपियों में समानता है और दोनों लिपियां लगभग पूरी तरह ध्वन्यात्मक (Phonic) हैं । आधुनिक तकनीकों का प्रयोग किया गया, पढ़ने और लिखने के अलावा बहुत सारा मौखिक कार्य भी हाथ में लिया गया, मौखिक काम समूहों में किया गया। चित्रों का वर्णन किया गया आदि-आदि । कन्नड़ सीखने के दूसरे साल में प्रशिक्षण स्कूल की एक छात्रा से बहुत मदद मिली, जिसकी मातृभाषा कन्नड़ है, लेकिन वह इस साल मार्च में चली जाएगी । भविष्य में हम मौखिक कार्य के लिए एक छोटा टेपरिकार्डर काम में लेंगे । प्रचलित पाठ्यपुस्तकों को काम में नहीं लिया जाता । प्रत्येक बच्चे की जरूरत के मुताबिक पाठ्यसामग्री विकसित करने का काम खुद शिक्षक करता है ।

संस्कृत

कोई औपचारिक शिक्षण प्रारंभ नहीं किया गया है लेकिन बच्चों ने अब तक महाभारत, हितोपदेश और दूसरे स्रोतों से लगभग 60 श्लोक याद कर लिए हैं । अब उन्होंने रामायण के संक्षिप्त संस्करण (150 श्लोक) को पढ़ना प्रारंभ किया है । जब किसी नए श्लोक से परिचय कराया जाता है तो उसे तेलुगु या अंग्रेजी में समझाया जाता है और फिर कंठस्थ किया जाता है । संस्कृत की औपचारिक शिक्षा इस वर्ष आरंभ की जाएगी, जिसमें पढ़ना,लिखना, और बोलना शामिल है । बच्चे पाक्षिक दीवार-समाचारपत्र से देवनागरी लिपि तो अभी से सीख रहे हैं ।

हिन्दी

हिन्दी सिखाना इस साल से शुरू होगा, ऐसी उम्मीद है ।

विज्ञान

एस.एस.एल.सी. के स्तर तक के विज्ञान के सभी विषयों के उपकरण स्कूल में उपलब्ध हैं । सभी उपकरणों को वर्करूम में आवश्यक प्रायोगिक कार्यों के लिए रखा गया है । विज्ञान और दस्तकारी के लिए बच्चों ने यह नया कमरा स्वयं तैयार किया है । कहना न होगा कि यह कार्य बच्चों द्वारा उनकी क्षमताओं और स्तर के अनुसार ही किया जा रहा है । बड़े बच्चे जो स्वतंत्र तौर पर कार्य करने में सक्षम हैं अपनी गति पर काम करते हैं, यद्यपि उनमें से कुछ एक ही प्रोजेक्ट पर काम करते हुए छोटे समूह बना लेते हैं। छोटे बच्चे विज्ञान से संबंधित चित्र बनाने और उन पर लिखने का काम करते हैं । इसमें बड़े बच्चे उनकी सहायता करते हैं। बच्चे 'आओ विज्ञान की खोज करें' (लेट'स डिस्कवर साइंस - डेविड ऑसबरॉ-सं.) नामक शृंखला को काम में लेते हैं । पूरक पुस्तकों के रूप में नुफील्ड की विज्ञान पुस्तकों तथा विज्ञान की 5/13 शृंखला की पुस्तकों को काम में लिया जाता है ।

पर्यावरण अध्ययन

विद्यालय के प्रारंभिक तीन सालों के दौरान सभी बच्चे इस पीरियड में एक साथ बैठते थे, हालांकि कुछ छोटे बच्चे पढ़-लिख पाने में असमर्थ थे। आम तौर पर कक्षा को समूहों में विभाजित कर दिया जाता था। प्रत्येक समूह में हर आयु के बच्चे होते थे । यह इसलिए कि छोटे बच्चे विभिन्न प्रयोगों को होने की प्रक्रिया में हिस्सा ले सकें या उन्हें देख सकें । और विभिन्न गतिविधियों में बड़े बच्चों का सहयोग ले सकें। अब ज्यादातर बच्चे, जिनमें छोटे बच्चे भी शामिल हैं, कुछ पढ़ सकते हैं । अत: यह कक्षा अंग्रेजी की कक्षा के पैटर्न पर ही चलाई जाती है । ज्यादातर बच्चों के पास अपनी पाठ्यपुस्तकें हैं और वे अपनी गति पर आगे बढ़ते हैं । कई बार ऐसा होता है कि बच्चे अपनी पुस्तकों में एक ही जगह होते है। और इस तरह वे विभिन्न गतिविधियां साथ-साथ कर सकते हैं। उसके अलावा शिक्षक छोटे बच्चों के लिए विशेष सामग्री तैयार करते हैं जिसमें लिखने के बजाय चित्र बनाना अधिक होता है । ''जीने के बारे में सीखना'' (लर्निंग अबाउट लिविंग-डेविड आसॅबरॉ सं.)

गणित

आज के भारत में परंपरागत और आधुनिक गणित को लेकर जो बहस छिड़ी हुई है उसे दोनों को पढ़ाकर सुलझाया गया है । पर कुछ स्कूलों में जहां यह तरीका (दोनों प्रकार की गणित पढ़ाने का) अपनाया जाता है वहां पारंपरिक गणित कक्षा आठ तक और आधुनिक गणित उसके बाद पढ़ाई जाती है । यह आधुनिक गणित सिखाने के पीछे मूल सिद्धांत को ही नकारता हुआ लगता है, और निश्चय ही यह तरीका बच्चों को समुच्चय, टेस्सेलेशन और नेटवर्कस की विशिष्ट शब्दावली सीखने को तो प्रोत्साहित करता है पर बिना किसी समझ के । आधुनिक गणित में बल इस बात पर होता है कि

पृष्ठ-32 पर जारी ...

पृष्ठ-29 का जारी ...

गणितीय अवधारणाओं को गणना में उनके उपयोग से पहले सिखायाजाये, और यही आधुनिक गणित की सबसे महत्वपूर्ण बात है । आधुनिक गणित की लगभग सभी पाठ्यपुस्तकों में दोष यह है कि वे केवल अवधारणायें सिखाती हैं, गणना के बिना ही । पहाड़े या लम्बे भाग जैसी उपयोगी गणितीय तकनीकों को या तो अनदेखा किया जाता है या अनिश्चित काल के लिए टाल दिया जाता है । नीलबाग में हम दोनों का साथ साथ चलाने का प्रयत्न करते हैं । अवधारणा निर्माण पर बहुत बल दिया जाता है पर सामान्य गणना की तकनीकें भी साथ-साथ चलती हैं । बच्चों को ये तकनीकें; मसलन जोड़ एवं गुणा के तथ्य; खेलों और गतिविधियों के माध्यम से सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है ।

इस वर्ष हमारा विचार है कि बड़े बच्चों को रिचर्ड स्कैंप की ''गणित को समझें'' पुस्तक दे दें । यहां बच्चों से अपेक्षित है कि वे अपनी गति से आगे बढ़ें और पुस्तक को इस प्रकार पढ़ें कि वह ''स्व-अध्ययन'' का औजार बन सके । छोटे बच्चे पहले ही ''ऑक्सफोर्ड मॉडर्न मैथेमेटिक्स'' का प्रयोग कर रहे हैं । अपनी गति के अनुसार वे यही करते रहेंगे (इस वर्ष भी)। इस तरह गणित के दोनों समूह अब मिल जाएंगे ।

विचार

हालांकि ज्यादातर कक्षाओं में जोर चिंतन एवं चिंतन रणनीतियां विकसित करने पर रहता ही है, फिर भी यह उपयुक्त ही होगा कि हर हफ्ते कुछ कालांश बच्चों को सोचना सिखाने के लिए रखे जायें । इसका मतलब ध्यान आदि जैसी चीज से नहीं है - बल्कि इंगलैण्ड अमेरिका में चितन सीखने के लिए जो पाठ्यक्रम निर्माण और कोर्स बनाने के प्रयत्न हुए हैं उन से है । ज्यादातर शिक्षा तंत्रों में शिक्षाविदों का विचार है कि सामान्य पाठ्यक्रम में ही ऐसे कुछ विषय होते हैं जो इस (चिंतन की) दक्षता का यथेष्ट अभ्यास करवा देते हैं, पर यह संभावना कम ही लगती है । वर्तमान में एक ऐसा पाठ्यक्रम बनाया जा रहा है जिसमें मानव के चिंतन के विभिन्न स्वरूपों को सूचीबद्ध किया जायेगा, उन्हें सिखाने के तरीके इजाद किये जायेंगे और इन दक्षताओं में अभ्यास के लिए लिखित सामग्री बनाई जायेगी । शुक्रवार दोपहर बाद का प्रश्नकाल इसकी शुरूआत है ।

संगीत

नीलबाग में हमारे लिए संगीत शिक्षा का अभिन्न हिस्सा है। यह केवल सह-शैक्षणिक गतिविधि नहीं है, जिसे परीक्षाओं के दबाव बढ़ने पर जब चाहे तब निरस्त कर दिया जाए । समय-सारणी में संगीत को अंग्रेजी के अलावा सभी विषयों से अधिक समय दिया जाता है और इस व्यवस्था की सफलता प्रत्यक्ष रूप से सामने आई है । अब बच्चे 10 भाषाओं में 100 के करीब गाने गा लेते हैं। इस से उनमें ध्यान से सुनने की क्षमता विकसित हुई है । यही नहीं ध्यान केन्द्रित करना एवं अच्छे परिणाम की प्राप्ति के लिए अनुशासन लगाने की क्षमता भी विकसित हुई है । वे जल्दी ही नया गीत सीख पाने में और इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह कि इस गीत के भावनात्मक ओर सौंदर्यात्मक पहलुओं का मूल्यांकन कर पाने में भी सक्षम हुए हैं । पिछले नवम्बर में उन बच्चों को रिकार्डर (अलगोजे जैसा वाद्य यंत्र) सिखाना आरंभ किया है जिन की अंगुलियां इसे बजाने के लिए यथेष्ट लंबी हो गई हैं । (बहुत छोटे बच्चे रिकार्डर नहीं बजा सकते क्योंकि उनकी अंगुलियां उसके छेदों तक नहीं पहुंच पार्ती ।- सं.) आशा करते हैं कि भविष्य में रिकार्डरों और विभिन्न आघात-वाद्यों का एक आरकेस्टा विकसित कर पायेंगे ।

पिछली टर्म में यह तय किया गया, एक पाक्षिक काव्य एवं संगीत संध्या का आयोजन किया जाये । यह आयोजन हमारे घर में (डेविड ऑसबरॉ का घर-सं.) ही रखा जाता है । बहुत छोटे बच्चों के अलावा सभी बच्चे, प्रशिक्षण स्कूल की छात्राएं एवं उस वक्त नीलबाग में ठहरे आगंतुक सभी का इस संध्या में स्वागत होता है। कविताएं पढ़ी जाती हैं और भारतीय संगीत के रिकार्ड बजाये जाते हैं ।

हस्त-शिल्प

हस्त-शिल्प, कला एवं कविता को शिक्षा का अभिन्न अंग माना जाता है । इनसे दक्षताओं का विकास होता है । शिक्षाक्रम के सभी विषयों में तालमेल बनता है तथा भावबोध एवं सौंदर्य-बोध का विकास होता है । यद्यपि हस्त-शिल्प के समूह छोटे हैं (10 से 11 के बीच), लेकिन इनमें सभी आयु समूहों के बच्चों को शामिल किया जाता है । बच्चे पृथक परियोजनाओं पर काम

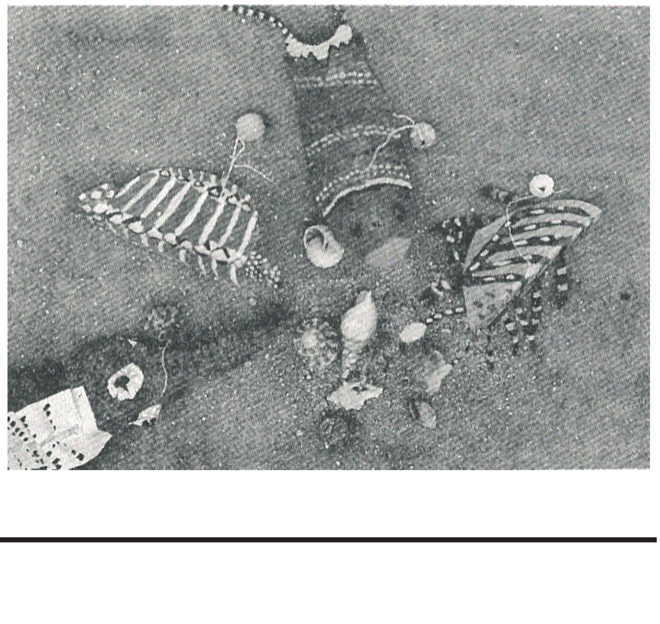

करते हैं । अनेक प्रकार के हस्त-शिल्प सिखाए जाते हैं - जैसे कशीदाकारी, सुई का काम, कागज के काम, कोलाज, चित्रकारी, मिट्टी के मॉडल बनाना, मोनुकिरी, पेपर-मेशी, गुड़िया बनाना, कठपुतलियां बनाना इत्यादि । ऐसी आशा है कि इस साल हम लकड़ी के काम का एक प्रभाग शुरू करेंगे, जहां काष्ठ-शिल्प, नक्काशी और बढ़ईगिरी के अलावा धातुकर्म भी सिखाया जाएगा। कहना न होगा कि लिंग के आधार पर कोई भेदभाव नहीं होता है। लड़के कशीदाकारी का काम करते हैं और ठीक इसी तरह लड़कियां निसंदेह लकड़ी एवं धातु के काम करेंगी। यदाकदा बच्चे एक बड़े कोलाज अथवा भित्ति-चित्र का काम साथ-साथ करते हैं। मिट्टी का काम सिखाने के लिए एक पेशेवर कुम्हार और एक पोट्री शिक्षक हैं। चाक है तथा बिना गिलेज किये बर्तनों को पकाने के लिए एक छोटी भट्टी (आवा) भी है । इस वर्ष एक अधिक महत्वाकांक्षी भट्टी बनाने का विचार है जिसमें ग्लेज्ड बर्तनों को भी पकाया जा सके ।

निर्माण कार्य

दो वर्ष पहले हमें एक और कक्षा कक्ष की जरूरत थी, अत: बच्चों ने अपने आप कक्ष बना लिया । इसकी आकृति यहां पारंपरिक रूप से 'सितुल्लू' कहे जाने वाले कक्ष जैसी है । यह एक गोल कमरा है जिसकी छत बीचो-बीच लगे खम्भे पर टिकी है । इसमें बच्चों ने (नींव के) पत्थर जमाये, दीवारें बनाईं, आवश्यक लकड़ी का काम किया और छप्पर (घास-पत्तों की छत) बनाया। पिछले वर्ष इससे अधिक महत्वाकांक्षी निर्माण कार्य आरंभ किया गया - विज्ञान और हस्तकार्य के लिए एक कमरे का । यह काम जून तक पूरा कर लिया गया । इस को प्रशिक्षण स्कूल की छात्राओं, अनेक मित्रों एवं नीलबाग आने वाले अतिथियों की मदद से पूरा किया गया । इस कक्ष में चार खिड़कियां और एक दरवाजा है तथा इसकी छत खपरेल (टाइल्स) की हैं । एक और मौके पर पिछले वर्ष बच्चों ने एक अभिभावक के घर के पुराने छप्पर की जगह नया छप्पर लगाया ।

निर्माण कार्य बहुत ही उत्तम गतिविधि है । इसमें सहयोग और समूह भावना की जरूरत होती है, यह प्रतिस्पर्धा की उस भावना को कतई बढ़ावा नहीं देती जो खेलों में जीतने के लिए आवश्यक होती है । निर्माणकार्य स्कूलों में प्रचलित प्रतिस्पर्धा वाले खेल का बहुत ही बढ़िया विकल्प है ।

खेल

बच्चों द्वारा सामान्य तौर पर खेले जाने वाले ; लुका छिपी जैसे; खेलों के अतिरिक्त अति प्रतिस्पर्धा वाले फुटबाल और हॉकी जैसे खेल यहां नहीं खेले जाते । बच्चों के पास एक जाल है, जिससे वे रिंग टेनिस और थ्रो बाल जैसे खेल खेलते हैं जिसमें प्रतिस्पर्धा के तत्त्व पर जोर नहीं दिया जाता । वे कबड्डी और खो-खो भी खेलते हैं ।

बागवानी व कृषि

प्रत्येक बच्चे की एक छोटी क्यारी (6' X 4') इसके अलावा एक थोड़ा बडा (200 वर्ग गज) भू भाग भी है, जिनमें वे अपनी पसन्द के फूल लगाते हैं । और सब्जियां उगाते हैं । यह एक सहयोगी उपक्रम होता है, सब्जियों को वे आपस में बांट लेते हैं । हमारे पास लगभग 3 एकड़ कृषि योग्य भूमि है, जहां हम विभिन्न प्रकार की स्थानीय फसलें उगाते हैं । हमारे स्कूल का छोटा होना तथा इसका ढीला किस्म के संघटन के कारण यह संभव है कि एक-दो दिन के लिए कक्षा को छोड़ बीज बोने, पौध लगाने और फसल काटने के काम में लग जायें ।

नौकर

स्कूल में साफ-सफाई, झाड़-पोंछ और गिलास धोने के लिए नौकर की व्यवस्था नहीं है । यह काम बच्चों द्वारा ही किया जाता है । वे ही हर हफ्ते फर्श पर गोबर का लेप करते हैं । फर्श मिट्टी को कूट कूटकर बनाया गया है । वे ही इसे सफेद रंगोली से सजाते हैं ।

नीलबाग की एक प्रमुख विशेषता यह है कि यहां इस भाव से बचा जाता है कि स्कूल आसपास के ग्रामीण जीवन से कटा हुआ है । उन बच्चों को शिक्षा या साक्षरता प्रदान करना जिनके अभिभावक साक्षर नहीं हैं, एक तरह का अलगाव बच्चों में पैदा करता ही है । लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि स्कूल आसपास के ग्रामीण जीवन से सघनता से जुड़ा नहीं हो सकता। इस संबंध का ठीक से निर्वाह नीलबाग में होता है जहां बच्चे आसपास के गांवों से आते हैं, कुछ बच्चों के अभिभावक यहां काम करते हैं और यहां के भवन आसपास के स्थानीय लोगों के मकानों से बहुत भिन्न नहीं हैं। वे अभिभावक जो नीलबाग में काम नहीं करते, अक्सर यहां आते रहते हैं या यहां के छात्र और शिक्षक इन अभिभावकों से मिलते रहते हैं । गांव में आयोजित होने वाले विभिन्न उत्सवों, शादियों और अन्य सामाजिक गतिविधियों में नीलबाग को स्थानीय देहात का अभिन्न हिस्सा माना जाता है ।

पिछले सत्र में हमने एक मीटिंग रखी । सभी-माता पिताओं के साथ यह हमारी पहली मीटिंग थी । इसमें प्रत्येक छात्र के माता-पिता में से कम से कम एक तो शामिल हुआ ही, अधिंकांश बच्चों के माता-पिता दोनों ने ही भाग लिया । नीलबाग में उपस्थित हर वयस्क ने इसमें भाग लिया । एक घंटे की वार्ता आयोजित की गई जिनमें बच्चों के माता-पिता को नीलबाग में दी जा रही शिक्षा के दर्शन और उद्देश्य के विषय में जानकारी दी गई । उसके बाद एक सामान्य परिचर्चा हुई, जहां बहुत सारे अभिभावकों द्वारा सवाल पूछे गए । हम इसे हर सत्र की गतिविधियों का नियमित हिस्सा बनाना चाहते हैं ।

पिछले सत्र में नीलबाग में एक और रोचक और अनूठा प्रयोग हुआ और वह है प्रौढ़ शिक्षा का प्रारंभ । बढ़ई, हॉस्टल में खाना पकाने वाली लड़की और एक अभिभावक ने निश्चय किया कि वे अंग्रेजी सीखना चाहेंगे । हमने उनसे प्रतिदिन साढ़े दस बजे आने और अंग्रेजी सीख रहे बच्चों की सामान्य कक्षाओं में होने को कहा। यह योजना सफल रही और बच्चों ने अभिभावकों को पढ़ने के अभ्यास, श्रुतलेख और लेखन की नकल उतारने में बहुत सहायता की । प्रौढ़ों ने तीन महीने में 'स्प्रिंग रीडर' की प्रारंभिक पुस्तक पूरी कर ली। धीरे धीरे उत्साह जगा और प्रात: काल की कक्षाओं में और भी प्रौढ़ आने लगे, जिनमें तीन उपरोक्त प्रौढ़, तीन और स्त्रियां, गांव का एक लड़का जो एस.एस.एल.सी में असफल रहा था, एक और लड़का जो इस वर्ष बी.ए. में प्रवेश नहीं पा सका। तीन और अभिभावकों ने पूछा है कि क्या वे 1977 के आरंभ से शामिल हो सकते हैं ।

इन प्रौढ़ों को ज्यादातर बच्चे ही पढ़ाते हैं और हमारा यह भय कि ऐसा करना कुछ न सुलझने वाली समस्याओं का कारण बन जायेगा, निर्मूल साबित हुआ । अभिभावक बच्चों द्वारा प्रसन्नतापूर्वक सहायता लेते हैं और यह सब मजे में चलता है । यह प्रयोग देश में आगे चलने वाले साक्षरता कार्यक्रमों में बच्चों की अधिक व्यापक भागीदारी का रास्ता दिखा सकता है ।

नीलबाग आने वाले बहुत से लोग पूछते हैं कि इन बच्चों का शिक्षा पूरी होने पर क्या होगा ? (अर्थात ये क्या करेंगे ?) सैद्धांतिक स्तर पर जबाव यह है कि हम नहीं जानते । एक धारणा को मानते हुए (और यह धारणा बहुत ही अक्खड़ धारणा है) यह कहा जा सकता है कि क्योंकि आज तक कोई शिक्षा प्रणाली ऐसी नहीं रही है जो बच्चों का (खास व्यवहार के लिए) अनुकूलन न करती हो, अत: जो बच्चे एक ऐसी शिक्षा प्रणाली से निकलेंगे जो कि अनुकूलन पर आधारित नहीं है, उनके बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता कि वे कैसे होंगे । यह आशा की जा सकती है कि वे सही मायनों में क्रांतिकारी होंगे, कि वे वर्तमान समाज को बदलने का प्रयास किये बिना न तो इसके अनुरूप ढलना चाहेंगे और न ही ढल पायेंगे । एक अधिक रोचक स्तर पर कहा जा सकता है कि चार वर्ष बाद, अब इसमें संदेह नहीं है कि बच्चों की उपलब्धि स्तर सामान्य स्कूलों से काफी ऊंचा है । और हांलाकि आंतरिक रूप से हम कोई परीक्षा आदि नहीं लेते पर जो बच्चे सार्वजनिक परीक्षाओं (सैकेण्डरी आदि) में बैठना चाहते हैं उन्हें ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित किया जायेगा । आशा करते हैं कि हम शैक्षणिक स्तर को इतना ऊंचा कर पायेंगे कि परीक्षा पास करना कोई समस्या नहीं रह जायेगी; जैसा कि वह अन्य स्कूलों में है । यह एक ऐसी समस्या है जो अन्य स्कूलों में अन्तिम दो तीन वर्ष की पूरी शिक्षा को ही परीक्षाभिमुख बनाने पर बाध्य कर देती है । दूसरी तरफ सभी बच्चे तो आगे अकादमिक पढ़ाई नहीं करना चाहेंगे, या नहीं कर पायेंगे। नीलबाग में शिक्षाक्रम की गहराई और गतिविधियों की विविधता के कारण इन बच्चों को शिक्षा के कुछ सुफल तो मिलेंगे ही, चाहे वे बड़े होकर कुछ भी करें ।

प्रशिक्षण स्कूल

वर्तमान (नीलबाग) स्कूल की प्रणाली की स्पष्ट सफलता, और सरलता व आनन्द, जो यहां बच्चे के सीखने में साफ तौर पर परिलक्षित होते हैं, वे कारण रहे हैं जिनसे यह विचार पनपा कि ऐसे शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाये जो समान प्रणाली पर आधारित स्कूल चला सकें । नीलबाग की एक आलोचना यह की जाती है कि शिक्षकों का अनुपात बहुत अधिक है, कि शिक्षक बहुत अनुभवी है । बहुधा यह टिप्पणी की जाती है कि जो प्रणाली नीलबाग में इतनी सफल है वह ''साधारण शिक्षकों'' के हाथ में बिल्कुल ही नहीं चल पायेगी । अत: प्रशिक्षण स्कूल का एक प्रमुख उद्देश्य ऐसे ''साधारण शिक्षकों'' का प्रशिक्षण करना है जो समान प्रणाली पर आधारित स्कूल अपने बलबूते पर चला सकें। यह अपेक्षा नहीं है कि नीलबाग में प्रशिक्षित शिक्षक सामान्य शिक्षा तंत्र में काम करेंगे, हालांकि यह है कि यदि वे ऐसा करते हैं तो खूब सफल रहेंगे। आशा यह है कि प्रशिक्षण के बाद ये शिक्षक छोटे स्कूलों में काम करेंगे, ऐसे स्कूल जो निजी तौर पर अनुदानित हों, सरकारी अनुदान से स्वतंत्र हों और जो मुख्यत: वंचित बच्चों के लाभ के लिए चलाये जा रहे हों । ऐसा नहीं लगता है कि इस प्रकार के स्कूलों के लिए धन जुटाना कोई बहुत कठिन काम होगा । भारत में बहुत लोग मिल जायेंगे जो ऐसे स्कूल या तो आरंभ करना चाहेंगे या उन्हें अनुदान देने को तैयार होंगे । जून 1977 में ऐसे दो स्कूल आरंभ होने वाले हैं ; एक कर्नाटक में और एक राजस्थान में । कर्नाटक में आरंभ होने वाला स्कूल कई संस्थाओं और निजी संस्थानों से अनुदानित होगा । और राजस्थान में आरंभ किये जाने वाला स्कूल पूरी तरह से निजी सहायता पर आधारित होगा । नीलबाग में प्रशिक्षण की विधि सामान्य प्रशिक्षण संस्थानों की प्रशिक्षण-विधि से उतनी ही भिन्न है जितनी कि नीलबाग स्कूल की शिक्षण-विधि सामान्य स्कूलों की शिक्षण-विधि से भिन्न हैं। प्रशिक्षण स्कूल का मूलभूत दर्शन संक्षेप में कहें तो यह है : ऐसा माहौल बनाना जिसमें युवा लोग (बच्चों को) पढ़ाना सीख सकें । ऐसे माहौल में ये सब शामिल होगा : आरामदायक और प्रीतिकर रहन-सहन की सुविधा, बच्चों का रोज का और नजदीकी साथ, नियमित कक्षा-अवलोकन और शिक्षण अभ्यास जो संपूर्ण प्रशिक्षण में चले, एक अच्छा पुस्तकालय, सीखने के नये अनुभवों की प्रचुरता, खूब-सारा हस्त कार्य, व्यवहारिक कार्य तथा अनुभवी शिक्षकों के साथ सेमिनारें एवं चर्चाऐं ।

दूसरे शब्दों में जोर इस बात पर है कि प्रशिक्षु सीखें कि पढ़ाया कैसे जाता है न कि इस पर कि प्रशिक्षक उन्हें पढ़ाना सिखाये । इस प्रकार के कार्यक्रम के लिए कुछ आरंभिक अभिप्रेरण आवश्यक है । एक बार यह आरंभिक अभिप्रेरण सुनिश्चित होने पर विविध गतिविधियों एवं आरंभ से ही बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में भागीदारी की भावना के आधार पर इसे बनाये रखना आसान है। सफलता भी एक बडा अभिप्रेरक है । जब प्रशिक्षु धीरे-धीरे यह समझने लगते हैं कि विभिन्न शिक्षण विधायें किस तरह आपस में गुथी हुई हैं और बच्चों से संबंध बनाने, कक्षाओं के संचालन एवं आधुनिक शिक्षण-विधियों में अपनी सतत् बढ़ती क्षमताओं का अनुभव करते हैं तो उनकी प्रेरणा भी अधिक बलवती होती जाती है । प्रत्येक प्रशिक्षु कम से कम एक या दो कालांश कक्षाओं में रोज बिताता है । इस के अलावा एक कालांश कार्य-शाला (हस्तकार्य के लिए) में होता है । बाकी बचा समय छात्रावास में पुस्तकालय में होते हैं । वहां वे अपने असाइनमेंटस पूरे करते हैं तथा अध्ययन और अन्य कार्य करते हैं । सप्ताह में दो गोष्ठियां होती हैं और कोई व्याख्यान नहीं होते ।

इस प्रकार संपूर्ण कोर्स का मुख्य काम चार मूल गतिविधियों में बंट जाता है :

(1) कक्षा-अवलोकन और शिक्षण अभ्यास

(2) हस्तकार्य और बढ़ईगिरी

(3) व्यावहारिक कार्य (सुलेख, श्यामपट्ट पर अभ्यास, अंग्रेजी की लिपि का ध्वन्यात्मक अभ्यास, आदि)

(4) अध्ययन, असाइनमेंटस और परिचर्चायें ।

1. कक्षा-अवलोकन एवं शिक्षण अभ्यास

हमें लगता है कि भारत एवं पश्चिम में, दोनों ही जगह पर, शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों का एक प्रमुख दोष उनमें शिक्षण अभ्यास की व्यवस्था को लेकर है । अधिकतर शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सत्र सिद्धांत और शिक्षण-विधियों पर व्याख्यानों से आरंभ होता है जिनमें प्रशिक्षु को चुपचाप सुनने के अलावा कुछ नहीं करना पड़ता बस थोड़ा बहुत नोट्स लेना पड़ सकता है । इस के अलावा प्रशिक्षु से कुछ पाठ तैयार करने को कहा जाता है, जो वह किसी पड़ोस के विद्यालय में पढ़ाता है । सामान्यतया यह पाठ पढ़ाना उस सत्र का सैद्धांतिक काम हो जाने पर ही किया जाता है। स्वाभाविक है कि इन बहुत ध्यान से तैयार पाठों का, जो सामान्यतया किसी ट्यूटर की निगरानी में पढ़ाये जाते हैं, कक्षा में सामान्यतया चलने वाले क्रिया-कलापों से बहुत ही कम संबंध होता है या फिर बिल्कुल भी नहीं होता । प्रशिक्षु द्वारा पढ़ाया गया पाठ या तो एक व्याख्यान हो कर रह जाता है या हद से हद शिक्षण का प्रदर्शन भर बन पाता है । यदि हम शिक्षण की दक्षता विकसित करना चाहते हैं और शिक्षण के मुख्य मायने बच्चों की सीखने में मदद कर पाना है तो इन भावी शिक्षकों के साथ कक्षाओं में प्रतिदिन काफी समय देना चाहिये, जहां वे अवलोकन करें, आत्मसात करें और अन्त में कक्षा-शिक्षक से शिक्षण का काम अपने हाथ में ले लें । नीलबाग में इस सब का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक प्रशिक्षु रोज कक्षा में कम से कम डेढ़ घंटा बिताता है, आरंभ में कक्षा में जो कुछ चल रहा होता है उसका अवलोकन करते हुए । कुछ समय बाद यह प्रशिक्षु शिक्षक एक या दो बच्चों को संभालता है या तो शिक्षण दक्षताओं के अभ्यास के लिये या उन बच्चों के काम में संशोधन के लिए। नीलबाग में जहां बच्चे अपनी गति से एवं बहुत छोटे समूहों में काम करते हैं यह व्यवस्था बहुत आसान हो जाती है । इस तरह प्रशिक्षु न केवल स्कूल के सभी बच्चों से रिश्ते बना पाता है बल्कि धीरे-धीरे बच्चों को सीखने में लगा पाने की तकनीकें भी विकसित कर लेता है । हर प्रशिक्षु एक-एक सप्ताह के लिए अलग अलग विषयों के कालांशों में जाता है, जिससे कि विभिन्न विषयों में शिक्षण का अनुभव मिल सके । इस तरह पर प्रशिक्षु संपूर्ण कोर्स के दौरान कम से कम 700 घंटे का शिक्षण एक अभ्यास करता है ।

2. हस्तकार्य

नीलबाग विद्यालय में हस्तकार्य की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है । हस्तकार्य के अध्ययन से ही बच्चे नयी दक्षतायें सीखते हैं । नयी समस्याओं से जूझते हैं । और साथ ही रचनात्मक एवं आनंददायक कार्यों में संलग्न होते हैं । इन्हीं कारणों से शिक्षण प्रशिक्षण में भी हस्तकार्य महती भूमिका निभाता है । प्रतिदिन कम से कम एक या डेढ़ घंटा हस्तकार्य को दिया जाता है । प्रशिक्षुओं का विभिन्न दस्तकारियों से परिचय करवाया जाता है, जिनमें खिलौने बनाना और लकड़ी का काम, कागज का काम एवं पुस्तकें बनाना,

पेंटिग और ड्राइंग, पेपरमेशी और कई सहयोगी हस्तकार्य होते हैं । प्रथम तीन माह मूल दक्षताओं के सीखने में लगाये जाते हैं । कोर्स का बाकी समय शिक्षण और खेल के लिए विविध उपकरण बनाने में लगता है । ये उपकरण प्रशिक्षु कोर्स पूरा होने पर अपने साथ ले जा सकती हैं और स्वयं पढ़ाना आरंभ करने पर उनका उपयोग कर सकते हैं । इस प्रकार प्रशिक्षुओं को भी बच्चों की तरह ही नये अनुभव दिये जाते हैं तथा नयी समस्याओं के समाधान के लिए कहा जाता है । नई दक्षतायें सीखने के माध्यम से प्रशिक्षु नई दक्षतायें सीखने में बच्चे को आने वाली कठिनाइयों के बारे में एक गहरी अंतरदृष्टि प्राप्त करते है ।

3. व्यावहारिक कार्य

व्यावहारिक कार्य के अंतर्गत नीलबाग में कई चीजें आती हैं । प्रत्येक प्रशिक्षु रोज कम से कम एक घंटा इस काम में लगाता है और इसमें भी पहले तीन माह मूल दक्षताओं के विकास में लगाये जाते हैं । इसमें कागज और बोर्ड पर सुलेख का अभ्यास होता है, ब्लैक-बोर्ड का उपयोग और ब्लैक-बोर्ड पर चित्र बनाना सीखा जाता है, ट्रेसिंग और किसी चित्र की बड़ी प्रतिलिपि बनाना सीखा जाता है, तथा दृश्य सहायक शिक्षण सामग्री (मैचिंग कार्डस, फ्लेश कार्डस आदि) बनाना सीखा जाता है ।

4. अध्ययन एवं असाइनमेंट लिखना

यह कोर्स के सैद्धांतिक हिस्से का केन्द्रीय बिंदु है । प्रशिक्षु संभवतया तीन घंटे या इससे कुछ अधिक समय रोज पढ़ने एवं असाइनमेंट लिखने में लगाते हैं । सैद्धांतिक पक्ष का मुख्य हिस्सा-शिक्षा-दर्शन और शिक्षा का इतिहास, समाज शास्त्र, मनोविज्ञान और शिक्षण-विधा - दो तरह से सीखा जाता है । पहले वर्ष में प्रशिक्षु से यह अपेक्षा रहती है कि एक सप्ताह में वह चार असाइनमेंटस पूरे करे । इन असाइनमेंटस में शिक्षा से जुडे विभिन्न विषयों पर लगभग पूरे पृष्ठ की सामग्री होती है । प्रत्येक असाइनमेंटस सीट के लिए दो तरह के प्रश्न होते हैं । एक तरह के प्रश्न वे जिनका उत्तर लिखकर देना होता है । ये जांचने के लिए होते हैं कि प्रशिक्षु गद्यांश को कितना समझा है, जो प्रशिक्षु के अपने अनुभवों (उदाहरण के लिए उसका अपना स्कूल) से गद्यांश की मुख्य बातों का संबंध बैठाने के लिए होते हैं और एक-दो अनुच्छेद में उत्तर की अपेक्षा रखने वाले ऐसे प्रश्न होते हैं जिनमें या तो प्रशिक्षु को अपना मत देना पड़े या कल्पना से काम लेना पड़े । या फिर संदर्भ पुस्तकें देखनी पड़ें। दूसरी प्रकार के प्रश्नों में चर्चा के लिए बिंदु होते हैं। प्रत्येक बुधवार और शनिवार को इन असाइनमेंटस पर चर्चा होती है । चर्चा गोष्ठियों में होती है, ये गोष्ठियां दो घंटे चलती हैं ।

असाइनमेंट्स के अलावा प्रशिक्षुओं से अपेक्षा होती है कि वे कम से कम दो घंटे रोज पढ़ें । कुछ पुस्तकें तो बहुत गहन अध्ययन के लिए निर्धारित हैं, जिनमें शायद एक सप्ताह में एक ही अध्याय पढ़ा जाता है । इन पुस्तकों को पढ़ने में प्रशिक्षु से अपेक्षा होती है कि प्रत्येक अध्याय का सार संक्षेप में लिखे तथा समस्याओं को गोष्ठियों में चर्चा के लिए लिखकर रखे । इसके अलावा प्रति सप्ताह एक चयनित पुस्तक दी जाती है जिसे पढ़ना होता है तथा किसी एक गोष्ठी में इस पर चर्चा होती है ।

शिक्षा पर आधुनिक लेखकों की पुस्तकों वाला एक विस्तृत पुस्तकालय भी है जिसमें प्रशिक्षुओं से पृष्ठ पलटते रहने की अपेक्षा रहती है ।

प्रशिक्षुओं की समयसारणी

8.00 से 8.30 अध्ययन कालांश

प्रशिक्षण विद्यालय के छात्र भारत के विभिन्न हिस्सों से आये हैं और विभिन्न भाषा-भाषी हैं । इस अध्ययन कालांश का कुछ समय तो संस्कृत सीखने को दिया जाता है और कुछ आधुनिक भारतीय भाषा सीखने को । प्रत्येक सुबह एक छात्रा अपनी भाषा अन्य छात्रों को पढ़ाती है । वर्तमान कोर्स में कन्नड़, बंगाली और तेलुगु भाषाएं सीखी गईं हैं । इससे सही माने में साथियों को पढ़ाने का अवसर मिलता है क्योंकि सीखने वाले छात्र कुछ नया सीख रहे होते हैं, अत: सिखाने वाली व सीखने वाली दोनों पक्षों को खूब लाभ होता है क्योंकि खूब खुली चर्चायें होती हैं । अत: पाठ पर एवं पढ़ाने की विधियों पर बिना किसी प्रकार की झेंप आदि से स्पष्ट टिप्पणियां संभव हो पाती हैं । शिक्षकों को श्यामपट्ट एवं बहुत से अन्य दृश्य सहायक उपकरणों के प्रयोग के लिए प्रोत्साहित किया जाता है । इस प्रकार की पढ़ाई के दूसरे वर्ष में भाषा की लिपि सिखाना आरंभ करते हैं । स्वयं एक अपरिचित लिपि सीखने के माध्यम से प्रशिक्षु बच्चों को लिपि सीखने में आने वाली कठिनाइयों एवं शिक्षक को लिपि सिखाने में आने वाली कठिनाइयों के बारे में अंतरदृष्टि प्राप्त करते हैं ।

8.45 से 9.30 सभा

प्रशिक्षणार्थियों से आशा की जाती है कि वे सभा शुरू होने के 15 मिनट पूर्व उपस्थित रहें, बच्चों के साथ खेलें और क्लासरूम को व्यवस्थित करने में मदद करें । इसके बाद वे गायन और संस्कृत श्लोकों के कालांश में उपस्थित रहें । पाठ्यक्रम के अंत में, उनसे अपेक्षा की जाती है कि नीलबाग में सिखाये गए प्रत्येक गीत को वे गा सके ।

9.30 से 10.45 कक्षा कालांश

नीलबाग में एक बार में छह से अधिक प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण नहीं दिया जाता । टाइम टेबल में वर्णित कक्षा कालांश में वे तरह-तरह की गतिविधियां करते हैं । उनमें से एक या दो तो

स्कूल के शिक्षक के साथ बैठते हैं और देखते हैं कि वह कैसे पढ़ाता है । एक मिट्टी के बर्तन बनाने वाले शेड पर जाता है और ऐसे ही एक दस्तकारी के कक्ष में जाता है। शेष छात्रावास के पुस्तकालय में काम करते हैं ।

10.45 से 11 अन्तराल

11 से 12.30 कक्षा

2 से 3 कक्षा

3 से 4 कक्षा

4 से 5 विभिन्न गतिविधियां

इस कालांश में कुछ विद्यार्थी बच्चों की निर्माण कला या बागवानी में सहायता करते हैं, कभी वे मिट्टी के बर्तन बनाने के कक्ष में जाते हैं या कभी छात्रावास में चले जाते हैं ।

5 से 6 खाली समय

प्रशिक्षणार्थियों से अपेक्षा होती है कि वे अपना पढ़ने व असाइनमेंट्स का काम छात्रावास में करें ।

8 बजे बाद-खाली समय

प्रशिक्षण का सातत्य

आवासीय पाठ्यक्रम पूरा होने तक पाठ्यक्रम के अंत में प्रशिक्षु लगभग दो साल नीलबाग में गुजार चुके होते हैं । पर इसका मतलब यह नहीं है कि उनका प्रशिक्षण-काल पूरा हो जाता है । उनका प्रशिक्षण अगले तीन सालों तक और चलता रह सकता है । इन तीन सालों में प्रशिक्षणार्थी अपना स्कूल चला रहे होंगे और उनमें पढ़ा रहे होंगे लेकिन उन्हें अभी भी प्रशिक्षणार्थी ही माना जायेगा। उनसे मासिक दिए जाने वाले कार्य और दूसरे लिखित काम पूरा करने के साथ साथ काफी मात्रा में अध्ययन की भी अपेक्षा की जाती है । इसके अलावा संभव हुआ तो एक मासिक समाचार पत्रिका भी प्रकाशित की जाएगी । जिससे सारे समूह के अलग-अलग शिक्षकों को आई समस्याओं और उनके संभावित हलों की जानकारी मिलेगी । उनके संभावित निदानों पर भी चर्चा की जाती है । आने वाले समय में नीलबाग में साल में दो सेमीनार होंगे, जब नए शिक्षक दो या तीन हफ्ते के लिए नीलबाग आएंगे, सामान्य समस्याओं पर विचार- विमर्श करेंगे और अपने अनुभव बांटेंगे ।

यह किसी भी प्रशिक्षण कार्यक्रम का अहम हिस्सा होना चाहिए । प्रशिक्षणार्थी को प्रशिक्षण प्राप्त कर लेने के बाद भी यह महसूस होना चाहिए कि प्रशिक्षण संस्थान उसकी हर तरह से सहायता करने को उपलब्ध है, कि जब समस्या का कोई हल न नजर आए तो समूह के अन्य सदस्यों या प्रशिक्षण संस्थान से सहारा मिल सकता है । जाहिर है कि इस प्रक्रिया में संस्थान का भी हित होगा। पत्राचार और आगमन से मिलने वाले नियमित फीडबैक से यह सुनिश्चित हो सकेगा कि बाद में पाठ्यक्रम बदले जा सकें ताकि अतीत में की गई गलतियों से बचा जा सके और भविष्य में आने वाली समस्याओं पर काबू पाया जा सके।

सघन कोर्स

पिछले साल एक अंग्रेजी माध्यम वाले निजी स्कूल के प्रधानाध्यापक ने सलाह दी कि चूंकि ऊंचे सुप्रेरित योग्य शिक्षकों का अभाव है, अत: उनके स्कूल से पास होने वाले एक-आध सुयोग्य छात्र को उसी स्कूल में पढ़ाने के लिए प्रेरित किया जाये। ऐसा सोचा गया कि स्कूल से अभी निकले छात्र को बिना प्रशिक्षण प्राप्त किये पढ़ाने में असंख्य कठिनाइयां आयेंगी । अत: यहां कई गोष्ठियों में इस प्रकार के प्रशिक्षण के लिए एक छोटा सघन कोर्स विकसित किया गया है । यह पाठ्यक्रम एक सप्ताह का होगा जिसमें प्रशिक्षु को शिक्षा दर्शन और शिक्षा मनोविज्ञान से परिचित करवाया जायेगा, और साथ ही पढ़ाने के तरीके तथा विभिन्न आवश्यक व्यावहारिक दक्षता से भी परिचय करवाया जायेगा। उसके बाद प्रशिक्षणार्थी अपने स्कूल लौट जाएगा और पढ़ाना शुरू कर देगा, लेकिन एक साल तक पत्राचार पाठ्यक्रम से जुड़ा रहेगा। इस कोर्स के हर पहलू का काम नीलबाग में दो वर्ष प्रशिक्षण प्राप्त कोई शिक्षक देखेगा और आशा है कि वर्ष के अंत तक यह स्कूल से निकला छात्र वह ज्ञान और तकनीकें हासिल कर सकेगा जिससे अपने आप पढ़ाना सीखता रहे ।

पत्राचार पाठ्यक्रम

नीलबाग स्कूल और प्रशिक्षण संस्थान के अतिरिक्त इस साल हमने कुछ व्यक्तिगत पत्राचार पाठ्यक्रम शुरू किए हैं । दो लड़कियों ने, जो और अधिक अंग्रेजी सीखना चाहती थीं, हमसे सहायता की प्रार्थना की । अब वे अपने गांवों में डी.एच. होव की 'एक्टिव इंगलिश' पढ़ रही हैं और हर हफ्ते शोधन के लिए अपना काम भेज रही हैं । इससे प्रेरित होकर ''हिन्दू'' अखबार में एक लेख छपा जिसका काफी स्वागत किया गया । बहुत सारे लोगों ने भावी शिक्षक होने की इच्छा प्रकट की और बहुत सारे छात्रों ने पत्र लिखे जो किसी प्रकार की सहायता चाहते थे । हम शिक्षक से विद्यार्थी का संपर्क करवा देते हैं । समय बीतने पर देखने की कोशिश करेंगे कि ये कार्यक्रम कैसा चल रहा है । वर्तमान में यह कार्यक्रम केवल अंग्रेजी तक ही सीमित है, पर संभावित शिक्षकों में अन्य विषयों में उन्नत योग्यता वाले लोग भी हैं, अत: आशा है भाविष्य में विषयों का दायरा फैलेगा । ◆